" ईर्ष्या - एक अभिशाप "

ईर्ष्या वास्तव में क्या है? ईर्ष्या मात्र एक भाव है जो स्वयं के निराश अथवा स्वयं को दूसरों से हीन समझने की दशा में हृदय से उत्कीर्ण होता है। यह मनुष्य के जीवन पर पड़ी हुई शनि की उस कुदृष्टि के समान है जिसके कारण मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ ही गँवा देता है और यह कुदृष्टि उस साढ़े साती शनि की महिमा से भी अनंत व मृत्युपर्यंत रहती है। वास्तव में शनि देव किसी भी प्राणी के संपूर्ण जीवनकाल में केवल सवा पहर से साढ़े सात पहर के लिए ही आते हैं जिसमें वह उस व्यक्ति को उसके द्वारा किए गये सुकर्मों व कुकर्मों का पूर्ण रूप से फल प्रदत्त करते हैं किंतु ईर्ष्या का मारा इंसान पूरे जीवन भर जलन की आग में मानो भुन-भुन कर अपना अस्तित्व ही खो बैठता है। ईर्ष्या समस्त रोगो की जननी है। इस संपूर्ण चराचर विश्व में जितने भी रोग है उनसे बचने के लिए कम से कम पहल तो की ही जा सकती है किंतु ईर्ष्या उन भयावह रोगो की वह जननी है जिससे निजात पाना मानो असंभव है। कहा जाता है कि मनुष्य के शरीर का एक महत्वपूर्ण भाग उसका मस्तिष्क होता है और यदि ये संकट में आ जाए तो मानो मनुष्य का जीवन संकट में आ जाता है किंतु ईर्ष्या-रूपी रोग तो इंसान के हीन मस्तिष्क होने की दशा में ही उत्पन्न होता है और परिणाम ये होता है कि इंसान अपने विचार-विमर्श करने की क्षमता भी खो बैठता है। एक बार को यह माना जा सकता है कि विश्वभर के समस्त विषैले जीव-जंतुओं के विष के उपचार हेतु कोई औषधि तो होगी किंतु ईर्ष्या इन समस्त विषैले जीव-जंतुओं की वह जननी है जिसका काटा तो पानी भी नही माँगता। ईर्ष्या रोग से ग्रसित व्यक्तियों के लिए इसका तज्य एक ऐसी चुनौती है जो जीते जी पूरा हो जाए तो परमात्मा का आशीर्वाद, उसका वरदान, अन्यथा समय पूरा, जीवन समाप्त। सामान्यतः इस अभिशाप का मारा तो चित्रगुप्त जी के मरण लेखों से ओझल सा ही हो जाता है। मौंत मागे तो मौंत नही और संतोषपूर्ण जीवन की तो आशा भी उस दिन मर गयी जब इस रोग से ग्रसित हुए। दिल का सुकून, घर में चैन और मानसिक शांति (ईर्ष्या के वरदान) न होने की दशा में अच्छे से अच्छे घर तबाह हो गये। आख़िर ईर्ष्यारूपी एक अति-सूक्ष्म बीज ही तो अपने मस्तिष्क में बोया था अब उसकी जड़ें फैल गयी और उसने विकराल रूप धारण कर लिया। जब मनुष्य के मस्तिष्क में ईर्ष्या का भाव उत्पन्न होता है तो इसके स्पष्टीकरण में उसे ईर्ष्या का एक वरदान निंदा प्राप्त होती है। अब तो ईर्ष्यारूपी पौधे में फल भी आने लगते हैं और वह इतना कुशल निंदक बन जाता है की स्वयं की भी निंदा करने से नही चूकता। पूर्णरूप से ज्यों ईर्ष्या का प्रसार हुआ, वाणी प्रवाह में इसका स्पष्टीकरण हुआ, सभी अपने दूर हुए, मानसिक अशांति व्याप्त हुई, जीवन घट-घट तज्य करने की मन ने चेष्टा की पर अब तो यमराज भी अपना भैंसा उठाए ऐसा भागे कि सीधा देवलोक पहुँचे और सुरराज के समक्ष हाथ जोड़कर बोले - " प्रभु मुझे क्षमा करें। मैं जिस व्यक्ति की जीवन-ज्योति लेने गया था वह तो एक ऐसे भयानक रोग से ग्रसित है जिसका उपचार तो हमारे देवलोक में संभव ही नही है और यदि इस रोग से मैं ग्रसित हो जाता तो निश्चित ही यह रोग देवलोक में फैल जाता।" इसके पश्चात वह चित्रगुप्त जी के समक्ष शीश नमन करके बोले - " प्रभु, इस व्यक्ति का जन्म-मरण ब्यौरा नष्ट कर दीजिए अन्यथ अनर्थ हो जाएगा। इस व्यक्ति के कर्मों का इसे यह दंड मिलना चाहिए कि यह मृत्युलोक (पृथ्वीलोक) में ही तडपे।" अब बेचारे की दशा तो उस धोबी के कुत्ते के समान हो गयी जो न तो घर का ही रहा और न ही घाट का। श्री ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी ने अपने जीवनकाल में हुए अनुभवों के आधार पर एक बात कही थी -" तुम्हारी निंदा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है।" अब तोड़ा ध्यान इधर केंद्रित करना है कि निबंध ईर्ष्या - एक अभिशाप में निंदा का आगमन आख़िर कैसे और क्यों? इससे समझना बेहद आसान है। जहाँ माँ (ईर्ष्या) के चारित्रिक प्रभाव को प्रकाश में लिया जा रहा हो वहाँ उसकी पुत्री (निंदा) जो कि माँ से भी दो कदम आगे रहती है, के चारित्रिक प्रभाव को प्रकाश मे कैसे ना लें? वास्तव में- " यदि कोई भी व्यक्ति सदगुणों की प्रतिमा हैं तब इन्ही सदगुणों का अनायास ही फायदा उठाकर लोग सरलता व सहजता से उसकी निंदा कर लेतें हैं।" अथवा इसे इस प्रकार भी समझ सकतें हैं कि व्यक्ति यदि सदगुणों की मूर्ति है तो उन्ही सदगुणों के चलते अन्य व्यक्ति उससे जलन का भाव या ईर्ष्या रखतें हैं और समाज की नज़रों में

उस श्रेष्ठ विचारों वाले व्यक्ति को या उसके चरित्र को धूमिल करने के लिए वो ही व्यक्ति समाज में उसकी निंदा करतें हैं।

क्या आप इस बात से परिचित हैं कि आख़िर इन्हे ये अभिशाप कैसे और क्यों मिला? इसका कारण है दूसरों से खुद को हीन समझना प्रारंभ किया, ईर्ष्यारूपी बाण से हृदय बिधा, और निंदारूपी विष जो कि उस हलाहल विष की भी माँ, जिसकी एक बूँद से संपूर्ण सृष्टि का विनाश सम्भव है, का शरीर में आगमन हुआ। ऐसे ईर्ष्यालु व्यक्तियों का कहना तो ये भी है कि हम तुम्हारी निंदा करते हैं तुम हमारी कर लो और कहना इसलिए भी उचित है क्योंकि शैतान (ईर्ष्याग्रस्त निंदक) किसी भी व्यक्ति को शैतान बनने की ही राय दे सकता है और यदि उस शैतानो के अथक प्रयासों के पश्चात भी वह मनुष्योत्तम बन गया तो ये उस ईर्ष्याग्रस्त निंदक के जीवन की शायद सबसे बड़ी व आख़िरी हार होगी। वास्तव में यदि मैं आपसे कहूँ कि जाइये और जा कर के एक गहरे कुएँ में कूद मरिए। तब क्या आप ऐसा करेंगे? अगर आप ऐसा नही करेंगे तब तो आप जानते ही हैं कि क्यों आप ऐसा नही करेंगे और अगर आप ऐसा करते हैं तो मैं बताता हू कि आख़िर वह ऐसी कौन सी दशायें होंगी जिनके चलते आप ऐसा करेंगे या तो आपका विवेक नष्ट हो गया हो, अक्ल पर पत्थर पड़ गये हो या फिर आप मुझ पर कुछ ज़्यादा ही विश्वास करते हो। पर वास्तव में ईर्ष्याग्रस्त निंदक तो विश्वास करने योग्य ही नही हैं, वह सृष्टि में उपेक्षणीय हैं।

आप उनके साथ कुछ समय व्यतीत तो कीजिए अगर आपको भी ये रोग, ये शाप ना मिल जाए तब कहिएगा।

मुझे इस बात पर किसी विद्वान द्वारा कही गयी एक बात स्मरण हो आई है जो कि ऐसे व्यक्तियों पर सटीक बैठती है-

" काजल से युक्त अथवा कालिख से युक्त किसी कक्ष में आप कितने ही स्वच्छ क्यों ना घुसें एक न एक दाग तो अवश्य ही लग जाता है।"

इन ईर्ष्याग्रस्त निंदकों को उस दिन तो रात में शायद बिल्कुल भी नींद नही आती हो जिस दिन इन लोगों की मंडली नही सजती होगी, जिस दिन इन्हे किसी की निंदा करने का सौभाग्य प्राप्त नही होता होगा। वास्तव में ईर्ष्याग्रस्त होने में अधिक समय नही लगता है जबकि ईर्ष्यामुक्त इंसान अपने संपूर्ण जीवनकाल में भी नही हो पाता है।

कुछ विद्वानों का मत तो ये भी है कि संयम से इस अभिशाप के प्रभाव को थोड़ा कम किया जा सकता है पर पूर्ण-रूप से इस शाप से मुक्त कैसे हो? इस प्रश्न पर सभी विज्ञ (विद्वान्) मूक हो जातें हैं। मेरा तो मानना ये भी है कि -

" ईर्ष्या वह दलदल हैं जिसमें यदि आप फँस गये तो जीवन भर फँसे रह जाएँगे और ज़्यादा हाथ पाँव मारे तो इसमें ऐसा फसेंगे कि जीवनमुक्त तो होंगे पर शायद आत्मा इस मृत्युलोक में ही विचरण करेगी।"

©लेखक: मयंक सक्सैना (आगरा, उत्तर-प्रदेश, भारत)

" ईर्ष्या - एक अभिशाप - मयंक सक्सैना "

Editing and Uploading by:
मयंक सक्सैना (Mayank Saxena) (Original Writer)
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत (AGRA, Uttar Pradesh, INDIA)

e-mail id: honeysaxena2012@gmail.com